

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६९

नित नवल योगानन्द झा

६९

विदेह | गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय | खण्ड-६९

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६९

‘नित नवल योगानन्द झा’ : तेरह ग्रन्थक समग्र समालोचना

समीक्षक आ सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२६

साहित्यिक समीक्षा आ सम्पादकीय विवेचन

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ६९। समीक्षक आ सम्पादक :
आशीष अनचिन्हार।

समीक्षाधीन पोथी : गजेन्द्र ठाकुर। 'नित नवल योगानन्द झा'। २०२६।

प्रथम प्रकाशन : २०२६। भाषा : मैथिली। मुद्रण-विन्यास : ६ × ९ इञ्च।

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर। सर्वाधिकार सुरक्षित।

सम्पादकीय भूमिका

लोकगाथा, स्मारिका, पत्रकारिता, शाक्त गीत, शब्दावली, कथा, सम्पादन,
अनुवाद, बालसाहित्य आ आलोचनात्मक आलेख—तेरह ग्रन्थक एहन विस्तार
योगानन्द झाक विविध साहित्यिक काज देखबैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर एहि
समस्त सामग्रीक दीर्घ अध्ययन प्रस्तुत करैत छथि।

एहि खण्डमे गजेन्द्रक प्रत्येक ग्रन्थ-समीक्षाक प्रमाण, वर्गीकरण आ निष्कर्षक
स्वतन्त्र परीक्षण अछि। लोकसमुदायक ऐतिहासिक परिचय, स्रोतक
विश्वसनीयता, सम्पादकीय हस्तक्षेप आ अनुवादक निष्ठाकेँ अलग मापदण्डपर
परखल गेल अछि।

समालोचनाक मूल आधार गजेन्द्र ठाकुरक उक्त प्रकाशित अध्ययन अछि।
पुस्तकमे उपस्थित साहित्यिक व्याख्याक मूल्याङ्कन ओकर अपन पाठ-विन्यास,
सन्दर्भ आ प्रमाणक अनुसार कएल गेल अछि। मूल पुस्तकक सम्पूर्ण पाठ एहि
खण्डमे पुनर्मुद्रित नहि अछि।

विस्तृत अनुक्रमणिका : खण्ड ६९

१. तेरह ग्रन्थक समग्र समीक्षा : मूल्याङ्कनक आधार.....	४
२. 'लोकजीवन ओ लोकसाहित्य' : लिखित इतिहासक बाहरक समाज.....	४
३. 'संकल्प' : स्मारिका एकटा सांस्कृतिक अभिलेख.....	५
४. 'आलेख सञ्चयन' : विविध निबन्धक बौद्धिक सूत्र.....	६
५. 'मैथिली शाक्त साहित्य' : गीत, देवी आ क्षेत्रीय स्मृति.....	६
६. 'मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष' : तथ्यक कालक्रम आ भाषाक भेद.....	७
७. 'गहबर गीत' : अनुष्ठानक स्त्रीस्वर.....	८
८. 'लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा' : स्मृतिक संग भाषा.....	८
९. 'मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली' : श्रमक भाषिक दस्तावेज.....	९
१०. 'कथा-लोककथा' : मौलिक, अनूदित आ लोकवृत्तक अन्तर.....	९
११. 'सीतावतरण' : सम्पादनक सृजनात्मक अधिकार.....	१०
१२. 'मंगल-प्रभात' : गाँधीविचारक मैथिली भाषान्तर.....	११
१३. 'भोरे-भोर' : बालकविताक स्वाभाविक संसार.....	११
१४. 'चतुर्दश सूत्र' : चौदह आलेखक सामूहिक अर्थ.....	१२
१५. लोकगाथा आ लोकगीत : कथाक स्तर अलग रखबाक कारण.....	१२
१६. संस्था, पत्रकारिता आ सार्वजनिक मैथिली.....	१३
१७. गीत आ काव्यक पाठ : सम्पादनक सीमा.....	१३
१८. शब्दावली आ व्यवसाय : कालक बदलैत प्रयोग.....	१४
१९. तेरह ग्रन्थक भीतरक साझा सूत्र.....	१४
२०. लोकस्मृति, समुदाय आ नैतिक सावधानी.....	१५
२१. सम्पादन, अनुवाद आ स्रोतक मर्यादा.....	१५
२२. गजेन्द्र ठाकुरक समालोचना : उपलब्धि आ सीमा.....	१६
२३. समेकित निष्कर्ष.....	१६

१. तेरह ग्रन्थक समग्र समीक्षा : मूल्याङ्कनक आधार

गजेन्द्र ठाकुरक 'नित नवल योगानन्द झा'क विषय-विस्तार पहिनुक पाँचो समीक्षाधीन पोथीसँ बहुत भिन्न अछि। एहि पुस्तकमे डॉ. योगानन्द झाक तेरह ग्रन्थक अध्ययन अछि—लोकजीवनक विश्लेषण, स्मारिका-सम्पादन, आलोचनात्मक आलेख, शाक्त गीत, पत्रकारिता-इतिहास, गहबरगीत, लोकशब्द, पारम्परिक व्यवसाय, कथा, प्रबन्धकाव्यक सम्पादन, गांधीविचारक अनुवाद, बालकविता आ चौदह समीक्षात्मक लेख। एहन सामग्रीकेँ एकटा मात्र साहित्यिक विधाक तराजूपर तौलल नहि जा सकैत अछि। समीक्षा लेल प्रत्येक पुस्तकक पाठस्वरूप, सामग्रीक प्रमाण आ सामाजिक प्रयोजन अलग निर्धारित करब जरूरी अछि।

गजेन्द्रक अध्ययनक प्रमुख विशेषता विस्तृत पाठ-विन्यास अछि। ओ तेरहो पुस्तकक आन्तरिक अध्याय, गीत, कथा अथवा आलेखक क्रम पर ध्यान दैत छथि। कोनो ग्रन्थमे ऐतिहासिक प्रकाशन-विवरण उपलब्ध अछि तँ ओकर विशिष्ट उल्लेख करैत छथि; कतय स्रोत-अनुमान अछि तँ परीक्षणक आवश्यकता स्वीकार करैत छथि। एहि पद्धतिक उपयोगिता स्पष्ट अछि : योगानन्द झाक साहित्यक एकटा अत्यन्त विस्तृत बौद्धिक मानचित्र तैयार होइत अछि। मुदा मानचित्रक सम्पूर्णता भूगोलक अंतिम सत्य नहि; सामग्रीक वर्गीकरण आ निष्कर्ष दू अलग कार्य अछि।

एहि पुस्तकक आलोचना करैत प्रमुख प्रश्न ई रहत जे गजेन्द्रक विस्तृत चर्चा योगानन्द झाक साहित्यिक दृष्टिक विकास, विचारक अन्तर्विरोध आ शोधक सीमा कोना सामने अनैत अछि। मूल तेरह पोथीक पाठक पुनर्मुद्रण कएल बिना ओहि समीक्षा-कृतिक मुख्य गुण आ प्रश्न अलग चिन्हित कएल जाएत। आशीष अनचिन्हारक एहि पुनर्पाठमे कथा, लोकशास्त्र, पत्रकारिता आ अनुवादकेँ समान ध्यान, मुदा अलग कसौटी देल गेल अछि।

२. 'लोकजीवन ओ लोकसाहित्य' : लिखित इतिहासक बाहरक समाज

पहिल ग्रन्थक अध्ययनमे गजेन्द्र लोकसाहित्यकेँ केवल गीत-कथाक मनोरंजक संग्रह नहि मानैत। छओ परम्परागत कार्यसमुदायक सामाजिक परिचय, चौदह लोकगाथा आ गहबरगीतक पृथक विवेचन देखबैत अछि जे योगानन्द झा

लोकक धार्मिक, आर्थिक आ भाषिक जीवनकेँ साहित्यिक साक्ष्य मानैत छथि। ई विस्तार उपेक्षित लोकवृत्तान्तकेँ साहित्यिक केन्द्रीय चर्चामे लऽ अनैत अछि। जातीय समुदाय अथवा पेशाक नामकेँ स्थानीय इतिहासक एक स्थिर, पूर्ण परिचय मानब, तथापि, गंभीर जोखिम अछि।

गजेन्द्र डोम, चमार, धोबी, हलुआइ, मलाह आ कुरेडी समुदाय सम्बन्धी विवेचनक क्रम अलग राखैत छथि। एतय समीक्षाक नैतिकता जरूरी अछि : ऐतिहासिक पेशागत परिचयकेँ वर्तमान समूहक अपरिवर्तनीय स्वभावक रूपमे नहि दोहराओल जाए। लोकसमुदाय अपन नाम, काम, शिक्षा आ जीविकामे समयक संग रूप बदलैत अछि। संग्रहक शब्द ऐतिहासिक साक्ष्य हो सकैत अछि; वर्तमान जीवनक दावा लेल वर्तमान प्रमाण चाही। गजेन्द्रक किताब जखन एहि भेद पर विचार करैत अछि, तखन ओ केवल लोकसाहित्यक प्रशंसा नहि, समाज-इतिहासक सन्तुलित अध्ययन करैत अछि।

श्यामसिंह, गणिनाथ-गोविन्द, कारिख, गाडो देवी, दीना-भद्री आ बेनीराम सहित चौदह गाथाक अलग परीक्षण लोकस्मृतिक बहुकेन्द्रिकता देखबैत अछि। लोकनायकक प्रतिष्ठा लिखित राजकीय इतिहाससँ भिन्न विधिसँ बनैत अछि। गीतक प्रदर्शन, समुदायिक आवश्यकता आ कथाक बारम्बार बदलबा में लोकइतिहासक ऊर्जा अछि। गजेन्द्रक विस्तृत विवेचन एतय मूल्यवान अछि, मुदा उपलब्ध पाठकेँ सर्वकालिक 'मूल' लोकगाथा मानबाक दाबी सँ बचल जाए।

३. 'संकल्प' : स्मारिका एकटा सांस्कृतिक अभिलेख

'संकल्प : विद्यापति-स्मृति-पर्व स्मारिका' पर गजेन्द्र ठाकुरक अध्ययन स्मारिकाकेँ केवल उत्सवक स्मरणिका नहि मानैत। सम्पादकीय, शुभकामना-पत्र, अध्यक्षीय वक्तव्य, प्रतिवेदन, आलोचनात्मक निबन्ध, कविता, संस्मरण, विज्ञापन आ समिति-विवरण एकहि जिल्दमे अछि। एहन विविध सामग्रीक कारण पाठक साहित्य, संस्था, सांस्कृतिक नेतृत्व आ सार्वजनिक आयोजनक सम्बन्ध बुझि सकैत अछि। ई ग्रन्थक अभिलेखीय अर्थ अछि।

गजेन्द्र स्मारिकाक प्रत्येक प्रविष्टिक रूप अलग पहिचानैत छथि। ई आवश्यक अनुशासन अछि, कारण शुभेच्छा-सन्देशकेँ स्वतन्त्र शोधलेख जकाँ उद्धृत करब वा प्रचार-विज्ञापनकेँ ऐतिहासिक तथ्यक अन्तिम प्रमाण मानब गलत होएत। आयोजकक आत्मचित्र आ बाहरी समालोचनाक अन्तर सदिखन रहैत अछि।

एहि भेदक स्पष्टता कृति-केंद्रित आलोचना सँ संस्थागत साहित्येतिहास दिशि एक उपयोगी कदम अछि।

विद्यापतिक नामक सांस्कृतिक प्रभाव एतय साहित्यिक पाठसँ अधिक सार्वजनिक पहचान रूपमे क्रियाशील अछि। आयोजन किनका स्मरण करैत अछि, किनका मंच दैत अछि, आ किनकर नाम अनुपस्थित अछि—ई प्रश्न स्मारिकाक अभिलेखमे छिपल रहि सकैत अछि। गजेन्द्रक अनुक्रमिक अध्ययन एहन अनुसंधानक आधार प्रदान करैत अछि, मुदा संस्थाक सम्पूर्ण इतिहास लेल बाहरी अभिलेखक तुलना आवश्यक अछि।

४. 'आलेख सञ्चयन' : विविध निबन्धक बौद्धिक सूत्र

'आलेख सञ्चयन'क नौ आलेख एके विषयक विस्तार नहि। लोकसाहित्य आ लोकजीवन, कवि आ गद्यकारक कृतित्व, पत्रकारिताक प्रश्न आ देशज शब्दक भाषिक इतिहास एकत्र अछि। गजेन्द्रक आलोचनात्मक काम एहि विविधताक भीतर एक सूत्र पहचानेब अछि। ओ शब्द, समाज आ साहित्यक पारस्परिक सम्बन्धक माध्यमँ पुस्तक पढ़ैत छथि। ई पद्धति सामग्रीक बाहरी विविधताकें वैचारिक सम्पर्क दैत अछि।

तथापि निबन्धक मूल प्रसंग पर ध्यान आवश्यक अछि। साहित्यकार पर लिखल मूल्याङ्कन आ ऐतिहासिक शब्दक व्युत्पत्तिक चर्चा समान प्रकारक प्रमाण नहि माँगैत। पहिलमे रचनाक पाठ आ समीक्षात्मक परम्परा, दोसरमे भाषिक रूपक इतिहास, स्रोतसाक्ष्य आ क्षेत्रीय व्यवहार आवश्यक अछि। गजेन्द्र एहि अन्तरक चर्चा करैत छथि; अध्ययनक अगिला पायदानमे प्रत्येक आलेखक मूल प्रकाशनक सन्दर्भ जोड़ल जाए तँ विचारक कालक्रम अधिक स्पष्ट होयत।

संग्रहक शक्ति साहित्यिक इतिहासकें केवल प्रसिद्ध ग्रन्थक कालक्रम नहि मानब अछि। भाषा-अनुसन्धान आ लोकस्मृति मैथिली साहित्यक सार्वजनिक संस्कृतिक अङ्ग अछि। गजेन्द्रक समीक्षा एहि बहुविध ज्ञानप्रक्रियाकें मान्यता दैत अछि।

५. 'मैथिली शाक्त साहित्य' : गीत, देवी आ क्षेत्रीय स्मृति

'मैथिली शाक्त साहित्य'क गजेन्द्रक अध्ययन शाक्त गीतक साहित्यिक बनावट, धार्मिक अनुभव आ लोकगायनक परम्परा बीच सम्बन्ध खोजैत अछि। देवीक नाम, अनुष्ठानक अवसर, प्रार्थनाक स्वर आ स्त्रीक सांस्कृतिक भूमिका पर

चर्चा एतय महत्त्वपूर्ण अछि। भक्ति-पाठक भावपूर्णता ओकर काव्यात्मक गुणक स्थानापन्न नहि; लय, पुनरावृत्ति, बिम्ब आ सम्बोधन सेहो ध्यान चाही।

पुस्तकक प्रकाशकीय सूचना, गीतसूची आ उपलब्ध छपल गीतक क्रम गजेन्द्र अलग जाँचैत छथि। ई उपयोगी अछि, कारण गीतक मुद्रित रूप आ गायल रूप बदल सकैत अछि। एकहि पाठक अनेक स्थानिक स्वर, धुन आ पंक्ति भिन्नता लोकगायनक सामान्य विशेषता अछि। लिखित संकलनकें एकमात्र मूल मानि लेबाक बदला प्रदर्शन-साक्ष्यक अवसर बचल रहब चाही।

देवी-भक्तिक बहुविध सामाजिक अर्थ होइत अछि। स्त्रीक आवाज कखनो प्रार्थना, कखनो सामुदायिक सुरक्षा, कखनो भय आ करुणा सँ भरल होइत अछि। गजेन्द्रक विवेचन एहि संकेतक उपयोग करैत अछि, मुदा अनुष्ठानक सामाजिक वास्तविकता लेल क्षेत्रीय सहभागिताक प्रमाण अलग आवश्यक होएत।

६. 'मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष' : तथ्यक कालक्रम आ भाषाक भेद

पत्रकारिता-इतिहास संबंधी पुस्तक पर गजेन्द्रक चर्चा साहित्येतिहासक विशेष कसौटी पर परखल चाही। पत्रिका, सम्पादक, प्रकाशनतिथि, प्रसारस्थान आ भाषा-संघर्षक तथ्य जाँ गलत अथवा अपूर्ण अछि, तँ समस्त इतिहासक क्रम प्रभावित होइत अछि। गजेन्द्र ग्रन्थक मैथिली भूमिका आ मुख्यतः हिन्दीमे लिखल इतिहास-विवेचनक भिन्नता स्पष्ट करैत छथि। ई तथ्यक स्वीकार जरूरी अछि; पोथी मैथिली पत्रकारिताक इतिहासपर अछि, तें ओकर प्रत्येक पृष्ठ मैथिलीमे लिखल अछि, एहन दावा भ्रामक होएत।

मैथिली पत्रकारिताक इतिहास केवल आरम्भक 'पहिल' पत्रिका खोजब नहि। पत्रिकाक आयु, पाठक-संस्था, छपाईक आर्थिक साधन, सम्पादकीय मतभेद, राजनीतिक परिवेश आ भाषिक आन्दोलनक भूमिकासँ समूचा सार्वजनिक क्षेत्र बनैत अछि। गजेन्द्रक पाठमे अभिलेखीय सत्यापनक आग्रह विशेष उपयोगी अछि। प्रसिद्ध तिथिक पुनरुक्ति ओकर प्रामाणिकता सिद्ध नहि करैत; समकालीन अंक, प्रकाशकीय विवरण आ बाहरी साक्ष्य एकसाथ देखबाक चाही।

एहि ग्रन्थक समालोचना केन्द्रीय उदाहरण अछि, जे साहित्यिक सम्मान आ ऐतिहासिक आलोचना अलग कार्य अछि। पूर्ववर्ती शोधक महत्त्व स्वीकार करैत

तथ्यसापेक्ष संशोधनक अधिकार बचल रहय—एहि दृष्टि सँ गजेन्द्रक अध्ययन मूल्यवान अछि।

७. 'गहबर गीत' : अनुष्ठानक स्त्रीस्वर

'गहबर गीत'क परिचयमे गजेन्द्र समर्पण, भूमिका, गीतक उपलब्ध पाठ आ प्रस्तुति-परम्पराक ध्यान रखैत छथि। गहबरक देवी-स्मृति, लोकपूजा, परिवारक आशा आ स्त्रीक सामूहिक स्वर आपसमे जुड़ल अछि। एकटा गीतकेँ केवल धार्मिक सूत्र मानल जाए तँ ओकर लय, स्मरणशक्ति आ घरक भीतरक सामुदायिक अर्थ छूटि जाएत। लोकगीतक पाठ जतेक महत्त्वपूर्ण अछि, ओकर गाबय के अवसर आ संगति ओतबे आवश्यक अछि।

संग्रहक समर्पणमे बच्चन भगतक स्मरण गजेन्द्र ऐतिहासिक जानकारीक रूपमे चिह्नित करैत छथि। एहन विवरण ग्रन्थक निर्माणक सामाजिक सम्बन्ध बुझबाक सहायता दैत अछि। मुदा गीत-संग्रहक संकलनकर्ता, गायक समुदाय आ प्रकाशित रूपक बीच अन्तर स्पष्ट रखब चाही। 'लोक' नाम दैतहि व्यक्तिगत श्रेय मेटा देब आवश्यक नहि।

लोकगीतक स्त्रीस्वरकेँ आधुनिक नारीवादक तैयार पदावलीमे बिना सावधानीक नहि रखबाक चाही। अनुष्ठानमे स्त्री कखन परम्पराकेँ निभबैत छथि आ कखन ओही परम्पराक भीतर व्यक्तिगत अनुभव व्यक्त करैत छथि, से गीतक विशिष्ट शब्द, विराम आ प्रसंगसँ जाँचल जाए। गजेन्द्रक पुस्तक एहि गम्भीर प्रश्नक दिशा देखबैत अछि।

८. 'लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा' : स्मृतिक संग भाषा

एहि संग्रहक अध्ययनमे गजेन्द्र विद्यापति सम्बन्धी लोकश्रुति, मैथिली लोकगीतक व्यापक सांस्कृतिक सम्बन्ध आ शब्द-इतिहासक विवेचन करैत छथि। लोकमेमोरीमे प्रसिद्ध कविक व्यक्तित्व अनेक कथा सँ बनैत अछि। लोकश्रुतिक साहित्यिक महत्त्व ओकर प्रत्येक कथनक ऐतिहासिक सत्य पर निर्भर नहि; समाज कविक रूपक कोना रचैत अछि, ई स्वतंत्र अनुसन्धानक प्रश्न अछि।

शब्द-सम्पदाक अध्ययनमे भाषाक प्रतिष्ठाक प्रश्न सेहो उपस्थित अछि। लोकशब्दकेँ 'अशिष्ट' मानि हटाएब सांस्कृतिक इतिहासक क्षति अछि; मुदा किछु लोकशब्दक समाजगत प्रयोग लिङ्ग वा समुदायक प्रति अपमानजनक सेहो भऽ सकैत अछि। समीक्षककेँ शब्दक अस्तित्व आ ओकर सामाजिक

अनुमोदनक बीच दूरी रखवाक चाही। गजेन्द्रक विवेचन साहित्यिक स्मृति आ भाषिक अभिलेखक एहि जटिलता दिस ध्यान खींचैत अछि।

एहि पुस्तक पर आलोचनाक केन्द्रीय प्रश्न एकटा अछि : संग्रहित कथन वास्तविक वक्ताक रूपमे कतय सँ आएल? स्रोतक स्थान, समय, पाठान्तर आ सन्दर्भ जतेक स्पष्ट रहत, निष्कर्ष ओतबे विश्वसनीय होएत।

९. 'मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली' : श्रमक भाषिक दस्तावेज

गजेन्द्रक तेरह-ग्रन्थीय अध्ययनमे ई पुस्तक भाषाविज्ञान आ समाजशास्त्रक मिलनक विशिष्ट उदाहरण अछि। परम्परागत समुदायसभक उपकरण, कार्यपद्धति, सामग्री, उत्पादन आ स्थानीय नाम मैथिलीक पेशागत शब्द-भण्डार निर्मित करैत अछि। जखन पारम्परिक श्रम बदलेत, किछु वस्तु आ शब्द लुप्त होएत, मुदा किछु नव अर्थ ग्रहण करत। शब्दकोशक उद्देश्य केवल प्राचीन रूपक संरक्षण नहि; परिवर्तनक विश्वसनीय अभिलेखन सेहो अछि।

जातीय नाम आ व्यवसाय बीच ऐतिहासिक सम्बन्धपर अत्यधिक सावधानी आवश्यक अछि। कोनो समुदाय केँ एक पेशाक चिरस्थायी प्रतिनिधि मानि देब सामाजिक यथार्थकेँ सरल करब अछि। गजेन्द्र ग्रन्थक मूल सामग्रीक परीक्षण करैत एहि प्रकारक स्थिरीकरण पर प्रश्न उठबैत छथि। वस्तुक स्थानीय नामक सम्मानक संग श्रमिकक वर्तमान स्वपहिचान सेहो महत्वपूर्ण होयत।

समीक्षा लेल सर्वोत्तम पद्धति नाम, वस्तु, काम, निर्माण-सामग्री, क्षेत्रीय उच्चारण आ वास्तविक उपयोग-वाक्यक अलग अभिलेख होएब अछि। गजेन्द्रक अध्यायवार पुनर्पाठ एहन शब्द-दस्तावेजीकरणक उपयोगिता स्पष्ट करैत अछि। मुदा ऐतिहासिक व्युत्पत्तिक दाबी लेल अतिरिक्त तुलनात्मक प्रमाण अलग रखवाक चाही।

१०. 'कथा-लोककथा' : मौलिक, अनूदित आ लोकवृत्तक अन्तर

'कथा-लोककथा'मे गजेन्द्र तीन विधागत श्रेणीक स्पष्ट भेद देखबैत छथि : मौलिक समसामयिक कथा, अनूदित नैतिक आख्यान आ लोकवृत्तात्मक कथा। 'शास्त्र-चिन्ता', 'फैसला' आ 'सपनाक डाक' आधुनिक सत्ता, न्याय आ ग्रामीण असुरक्षाक विषय उठबैत अछि। 'स्वाभिमानक मार्ग', 'अपन-अपन पानि' आ

अन्य लघु अनूदित कथामे सूत्रात्मक नैतिक प्रश्न अछि। ‘धानक हड्डि’, ‘सात बहिन’ आ ‘बेनीराम’ जेकाँ लोककथामे सामूहिक स्मृतिक अलग विन्यास अछि। एहि विभाजनक अभावमे साहित्यक गुणदोषक परीक्षण भ्रमित होएत। आधुनिक कथामे चरित्रक मनोविज्ञान आ सामाजिक संस्था अधिक महत्त्व पबैत अछि; नैतिक लघुकथामे संक्षिप्त परिणाम; लोककथामे पुनरावृत्ति, अद्भुत घटना आ सामूहिक अर्थ। गजेन्द्र सभ रूप पर पृथक टिप्पणी कऽ एहि विविधताकें पाठकीय स्पष्टता दैत छथि।

एहि संग्रहक ‘कबिलपुरक संक्षिप्त कुलीननामा’ जेकाँ परिशिष्ट साहित्यिक कथा सँ अलग अभिलेखीय जाँच चाहैत अछि। पारिवारिक अथवा वंशसम्बन्धी पञ्जीकें कथाक प्रमाण वा लोकपरम्पराक अन्तिम सत्य मानब उचित नहि। गजेन्द्रक पद्धतिक लाभ एही स्रोतभेदक स्वीकारमे अछि।

११. ‘सीतावतरण’ : सम्पादनक सृजनात्मक अधिकार

‘सीतावतरण’क अध्ययन एक कठिन साहित्यिक प्रश्न उठबैत अछि : उपलब्ध रचनाकें सम्पादक नाम, क्रम आ रूप देथि तँ पाठक समक्ष प्रस्तुत पुस्तकमे मूल रचनाकारक कतेक आ सम्पादकक कतेक हस्तक्षेप अछि? गजेन्द्र शीर्षक-निर्धारण आ उपलब्ध रचनाक स्थितिक साक्ष्यक आधारपर एहि भेदक चर्चा करैत छथि। स्नेहलताक काव्यात्मक आवाजक सम्मान तखने सम्भव अछि, जखन योगानन्द झाक सम्पादकीय श्रेय सेहो स्पष्ट रहय।

रामजन्म-सोहर, शैव पदावली, सीताक प्राकट्य, जनकक धार्मिक-सामाजिक परिप्रेक्ष्य आ परिशिष्टक भिन्न गीत—ई सब केवल एकरस निरन्तर प्रबन्धक कड़ी नहि। गीत अपन सामुदायिक जीवन रखैत अछि; संपादित क्रम ओकर नूतन पाठ बनबैत अछि। गजेन्द्रक विवेचन एहि संरचनागत तनावकें पहिचानैत अछि।

सीताक जन्मक मिथिला-केन्द्रित अर्थ, कृषि आ स्थानीय संस्कारक उपस्थिति अध्ययनकें सांस्कृतिक गहराई दैत अछि। मुदा सम्पादित पाठक आधार, आंशिक अथवा अपूर्ण पंक्ति, संस्करणान्तर आ तिथिक प्रश्न छिपि नहि जाए। साहित्यिक सौन्दर्य आ पाठसम्पादनक प्रमाण दुनू एक साथ आवश्यक अछि।

१२. 'मंगल-प्रभात' : गाँधीविचारक मैथिली भाषान्तर

‘मंगल-प्रभात’क समीक्षा करैत गजेन्द्र ग्रन्थकें स्वतन्त्र मौलिक दार्शनिक रचना नहि, गाँधीजीक आश्रम-व्रतक मैथिली रूपान्तर मानैत छथि। मूल विचार, हिन्दी मध्यवर्ती पाठ आ अन्तिम मैथिली प्रस्तुति बीचक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण अछि। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता-निवारण, श्रम, सर्वधर्म-समभाव, नम्रता आ स्वदेशी जेकाँ विषय अलग नैतिक अध्याय बनबैत अछि। एक शब्दक अनुवाद सेहो पूर्ण वैचारिक अर्थ बदलि सकैत अछि।

गजेन्द्र पन्द्रह मुख्य निबन्ध आ व्रतसम्बन्धी परिशिष्टक क्रम देखैत छथि। एहि पद्धति सँ पाठक सार्वजनिक आदर्श आ व्यक्तिक दैनिक अनुशासनक सम्बन्ध स्पष्ट पबैत अछि। मुदा गाँधीविचारक आजुक उपयोगितापर स्वीकृति-अस्वीकृति देब अनुवादक पाठनिष्ठाक मूल्याङ्कन सँ भिन्न कार्य अछि। समीक्षककें विचारक नैतिक असहमति आ अनुवादक भाषिक शुद्धता अलग जाँचबाक चाही।

एहि कृतिक विशेष महत्त्व मैथिलीमे दार्शनिक आ सामाजिक गद्यक व्याप्ति अछि। गजेन्द्रक विवेचन ई देखबैत अछि जे विचारक लक्ष्यभाषा बदललासँ सामाजिक पाठकवर्ग सेहो बदलैत अछि।

१३. 'भोरे-भोर' : बालकविताक स्वाभाविक संसार

‘भोरे-भोर’क समीक्षा बालसाहित्यकें छोट वयस्कक उपदेश मानबाक प्रवृत्तिपर प्रश्न करैत अछि। पुस्तकक पहिल रचना आठ खण्डमे भोरक अनुभवसँ दिनक क्रिया धरि बढैत अछि; दोसर रचना ‘प्रार्थना’ पाँच खण्डमे बालकक नैतिक अभिलाषा प्रकट करैत अछि। गजेन्द्र प्रत्येक पृष्ठक भाषिक, दृश्यात्मक आ शैक्षिक असर पर विचार करैत छथि। चित्र आ पाँतिक सम्बन्ध बालपाठक लेल अर्थ बनबैत अछि; चित्र सजावट मात्र नहि।

बालकक अनुभवक क्रममे पक्षी, हवा, सूर्योदय आ घरक दिनचर्या प्रवेश करैत अछि। एतय सहज ध्वनि, लय आ पुनरावृत्ति काव्यक बल अछि। मुदा नैतिक आदर्शक अत्यधिक सूची बालकक कल्पनाकें सीमित करि सकैत अछि। बालकक प्रश्न, खेल आ स्वतन्त्र उत्सुकता कविता भीतर कतेक जगह पबैत अछि, से मूल्याङ्कनक केन्द्र होएब चाही।

गजेन्द्र अनुवादक प्रक्रिया आ मूल शीर्षकसँ मैथिली रूपक दूरी पर ध्यान देइत छथि। सरल भाषा वर्तनीक सामान्यीकरण मात्र नहि; बालकक बोलचालक लय,

अनुकरणीय क्रिया आ श्रव्य स्पष्टता सेहो चाही। एहि दृष्टिँ समीक्षा उपयोगी अछि।

१४. 'चतुर्दश सूत्र' : चौदह आलेखक सामूहिक अर्थ

'चतुर्दश सूत्र'क तीन विभाजन—काव्य विवेचन, गद्य विश्लेषण आ अवदान-मूल्याङ्कन—संग्रहक अंतःरचना बनबैत अछि। गंगावन्दना, हरिमोहन झाक कथाकाव्य, उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', स्नेहलताक मिथिला-प्रेम, 'स्वयंप्रभा' आ 'कविता कुसुमाञ्जलि' पर आलेख पहिल परिधि अछि। 'श्यामली', मायानन्द मिश्रक निबन्ध आ 'ग्राम-गणराज्य' दोसर परिधि। पत्रकारिता, भाषा-अनुसन्धान, साहित्येतिहास, सजीवनी समालोचना आ लोकगाथा-अध्ययन तेसर परिधि बनैत अछि।

गजेन्द्र चौदहो आलेखक अलग समीक्षा करैत छथि; विशेष रूपसँ रामदेव झाक सजीवनी समालोचना आ मणिपद्मक लोकगाथा-अनुसन्धानक बहस साहित्येतिहासक पद्धति पर प्रकाश दैत अछि। आलोचकक नाम लेल जाएब आ हुनकर कार्यपद्धतिक वास्तविक उदाहरण देब एक नहि अछि। गजेन्द्रक विवेचन दोसर दिशा मे प्रयास करैत अछि। साहित्यक पूर्वप्रचलित मतकेँ नूतन पाठसाक्ष्यसँ जाँचब सजीवनी आलोचनाक स्थायी अर्थ मानल जा सकैत अछि।

संग्रहक अन्तिम आलेखक व्यापकता पाठकेँ याद करबैत अछि, जे मैथिली साहित्यक इतिहास केवल रचना आ लेखकक सूची नहि। सम्पादक, शोधकर्ता, पत्रकारिता-संस्था आ लोकगायक सभ सांस्कृतिक क्षेत्रक निर्माणमे सहभागी छथि। एहि विस्तृत दृष्टिक मूल्याङ्कन गजेन्द्रक पुस्तकक सबसँ महत्त्वपूर्ण पक्षमे अछि।

१५. लोकगाथा आ लोकगीत : कथाक स्तर अलग रखबाक कारण

'लोकजीवन ओ लोकसाहित्य', 'गहबर गीत', 'लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा' आ 'चतुर्दश सूत्र'क लोकगाथा-विषयक आलेखकेँ एकसाथ पढ़ला पर लोकक चारि अलग उपयोग देखाइत अछि। एक ठाम लोकजीवनक सामाजिक-आर्थिक अध्ययन, दोसर ठाम अनुष्ठानमे गायल गीत, तेसर ठाम भाषिक स्मृति, आ चारिम ठाम शोधपरम्पराक इतिहास। गजेन्द्रक पुस्तक एहन सामग्रीकेँ परस्पर

निकट अनैत अछि। मुदा चारूको एकहि 'लोकचेतना' नामक कोटिमे पूर्णतः मिला देब गलत होएत।

लोकगाथाक पाठ में कथा-विन्यास, गायकक स्वर आ समुदायिक न्यायबोध तीनू अलग रहैत अछि। गीतक पंक्ति उपलब्ध अछि, मुदा प्रस्तुति सुनल नहि गेल अछि तँ केवल मुद्रित पाठक व्याख्या कएल जा सकैत अछि। गजेन्द्रक विवेचनक ई मर्यादा स्वीकारबाक क्षमता पोथीक शक्ति अछि। भविष्यक शोधमे प्रदर्शनस्थल, गायकक स्वीकृति, क्षेत्रीय पाठान्तर आ अभिलेखक तिथि जोड़ल जाए तँ लोकसाहित्यक इतिहास अधिक स्पष्ट होयत।

१६. संस्था, पत्रकारिता आ सार्वजनिक मैथिली

'संकल्प' आ 'मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष' दुई स्वतंत्र विषयक पोथी अछि, मुदा दुनूमे मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक निर्माणक दस्तावेज भेटैत अछि। एकठाम स्मृति-पर्वक आयोजन, समिति, वक्तव्य आ स्थानीय प्रकाशन-संस्कृति अछि; दोसर ठाम पत्रिकाक क्रम, सम्पादकीय श्रम आ भाषिक संघर्षक दीर्घ इतिहास। गजेन्द्र एहि दुनूक अध्ययन करैत साहित्यकें केवल काव्य-पाठक निजी क्रिया नहि मानैत।

तथ्यक प्रमाण एहि दुनू पुस्तक लेल समान नहि। स्मारिकाक कार्यक्रमपत्र कार्यक्रमक प्रस्ताव बतबैत अछि, ओकर सफल आयोजनक पूर्ण प्रमाण नहि; पत्रिकाक नामक उल्लेख ओकर अखण्ड अंक-शृंखलाक प्रमाण नहि। एहि सूक्ष्म अन्तरकें मानिकऽ जखन गजेन्द्र तिथि आ प्रकाशनक प्रश्न उठबैत छथि, तखन समीक्षा संस्थागत इतिहासक कठिन काज करैत अछि। संगठनक गौरवक संरक्षणसँ बेसी महत्त्वपूर्ण ओकर प्रमाणसंगत विवरण अछि।

१७. गीत आ काव्यक पाठ : सम्पादनक सीमा

'मैथिली शाक्त साहित्य', 'सीतावतरण' आ 'भोरे-भोर' गीत अथवा पद्यक अलग पाठक समक्ष अनैत अछि। पहिलमे धार्मिक गीतक सामुदायिक स्मृति, दोसरमे सम्पादित प्रबन्ध आ स्वायत्त गीतक तनाव, तेसरमे बालकविताक चित्र-लय महत्त्वपूर्ण अछि। गजेन्द्रक पाठक उपयोगिता एहि बिन्दुमे अछि जे तीनूकें केवल धार्मिक वा नैतिक शिक्षा कहि नहि छोड़ैत। प्रत्येक रचनाक अपना श्रोता, स्वर आ पाठ-प्रविधि अछि।

संपादित अथवा अनूदित गीतमे पाठान्तरक जिम्मेदारी विशेष बद्धि जाइत अछि। मूल रचनाकारक वाणी, सम्पादक द्वारा निर्धारित अनुक्रम, शब्दक अर्थसुलभता आ पाठकक सहज ग्रहणशक्ति परस्पर सम्बन्धित अछि। अनुवादक दोसर भाषाक आधार लैत छथि तँ मध्यवर्ती पाठक श्रेय देल जाए; सम्पादक अपूर्ण काव्यक नाम दैत छथि तँ ओ हस्तक्षेप स्पष्ट करथि। गजेन्द्रक समालोचना एहि श्रेयभेदक गंभीर महत्त्व उजागर करैत अछि।

१८. शब्दावली आ व्यवसाय : कालक बदलैत प्रयोग

‘मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली’ आ ‘लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा’क अध्ययनमे गजेन्द्रक केन्द्र भाषा अछि, मुदा भाषा एतय समाजसँ अलग व्याकरणिक वस्तु नहि। शब्दक अर्थक संग वस्तु, निर्माण-कौशल, उत्पादनक मौसम आ सामाजिक श्रमक स्मृति जुड़ल रहैत अछि। ऐतिहासिक शब्दक प्रमाण साहित्यक उद्धरणसँ मिलि सकैत अछि, किन्तु वर्तमान शब्दप्रयोगक वास्तविकता लेल नूतन वक्तासाक्ष्य चाही।

शब्दक जीवन समाप्त होएब आ शब्दक वस्तु अप्रचलित होएब एके नहि। पुरान नाम कहावत, गीत अथवा रूपकमे जीवित रहि सकैत अछि। कोनो नव उपकरण लेल पुरान शब्द नव अर्थ ग्रहण करि सकैत अछि। गजेन्द्रक समीक्षा शब्दार्थक एहि गतिशीलता दिस संकेत करैत अछि। अतः कोश-विन्यासक समय मृत्यु अथवा शुद्धताक अंतिम फैसला देबाक बदला प्रयोग-क्षेत्र, काल आ स्रोत दर्ज करब अधिक उपयोगी होएत।

१९. तेरह ग्रन्थक भीतरक साझा सूत्र

योगानन्द झाक लेखनमे तीन प्रमुख धारा बारम्बार देखाइत अछि। पहिल लोकजीवन आ इतिहासक सम्बन्ध; दोसर भाषा, शब्द आ साहित्यिक साक्ष्यक अध्ययन; तेसर सम्पादन, अनुवाद आ सांस्कृतिक संस्था द्वारा पाठक लेल सामग्री उपलब्ध करेनाइ। गजेन्द्रक तेरह-पुस्तकीय विवेचन एहि तीनूक एकहि लेखकक कार्यमे भेटब देखबैत अछि। मुदा साझा धारा खोजैत समय विधागत अन्तरक विसर्जन नहि होएब चाही। लोकगीतक प्रमाण, पत्रकारिताक तिथि आ दार्शनिक अनुवादक निष्ठा अलग कसौटी मांगैत अछि।

एहि पुस्तकक अनेक अंशमे स्रोतविवरणक सूक्ष्मता उल्लेखनीय अछि। प्रकाशन-वर्ष, मूल पृष्ठ, ग्रन्थसूची, प्राथमिक रचना आ समीक्षा-व्याख्याक भेद साहित्यक

शोध-मूल्य बढ़बैत अछि। मुदा विस्तारक कारण दोहराव आ कखनो-कखनो अधिक आत्मविश्वासी सामान्यीकरणक खतरा अछि। आलोचनाक तथ्यसापेक्ष गुणक अर्थ ई नहि जे प्रत्येक समेकित निष्कर्ष सदा निर्विवाद अछि।

२०. लोकस्मृति, समुदाय आ नैतिक सावधानी

लोकगाथा आ पारम्परिक व्यवसायक वर्णनमे समुदायसभक नाम बहुत बेर साहित्यिक, सामाजिक आ अभिलेखीय श्रेणी रूपमे उपस्थित अछि। एहि नामक ऐतिहासिक अस्तित्वक वर्णन आलोचनामे आवश्यक हो सकैत अछि, मुदा वर्तमान व्यक्ति-सभक पहचान, पेशा अथवा धार्मिक व्यवहारपर सार्वकालिक निर्णय देबाक साधन नहि। गजेन्द्रक अध्ययनक शक्तिशाली स्थल ओ अछि जतय ई अन्तर स्पष्ट राखल गेल अछि। आशीष अनचिन्हार एहि सावधानीकें तेरहो पुस्तकक सामूहिक मूल्याङ्कनक आवश्यक शर्त मानैत छथि।

सांस्कृतिक स्मृतिक सम्मानक अर्थ असमानताक मौन अनुमोदन नहि। लोकगीतक सौन्दर्य, व्यवसायिक शब्दक महत्व आ समुदायिक इतिहासक गौरवक संग प्रश्न उठल चाही जे के बोलैत अछि, केकर आवाज दर्ज भेल अछि आ केकर अनुपस्थिति अछि। गजेन्द्रक कृति एहन शोधक सामग्री दैत अछि; अगिला क्षेत्रीय अनुसन्धान एहि प्रश्नसभकें अधिक प्रत्यक्ष साक्ष्य देत।

२१. सम्पादन, अनुवाद आ स्रोतक मर्यादा

‘संकल्प’, ‘सीतावतरण’, ‘मंगल-प्रभात’ आ ‘भोरे-भोर’क चर्चा मिलाकऽ देखला पर गजेन्द्रक आलोचनामे सम्पादकीय मध्यस्थताक महत्व स्पष्ट होइत अछि। साहित्य पाठक धरि कहियो संकलनक माध्यमँ, कहियो अनुवादक माध्यमँ, कहियो पुनर्संयोजनक माध्यमँ पहुँचैत अछि। प्रकाशनक अन्तिम रूप सदा मूल रचनाक बिना हस्तक्षेपक प्रतिरूप नहि। एहि कारण मूल रचनाकार, संकलनकर्ता, सम्पादक आ अनुवादकक श्रेय अलग बताओल जाए।

स्रोतक मर्यादाक प्रश्न विशेषतः ‘मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष’ आ शब्दावली सम्बन्धी पुस्तकमे निर्णायक अछि। लिखित ग्रन्थक दावा, प्राथमिक अभिलेख आ समीक्षकक सम्भावित पुनर्निर्माण तीनू अलग वाक्यरूपमे उपस्थित रह्य। गजेन्द्रक विस्तृत ग्रन्थ एहि समस्या सँ पूर्णतः मुक्त नहि, मुदा ओ बहुतेक स्थानपर ओकर समाधानक दिशा देखबैत अछि। आलोचनाक स्थायी गुणवत्ता प्रमाणक ई अनुशासन अछि।

२२. गजेन्द्र ठाकुरक समालोचना : उपलब्धि आ सीमा

‘नित नवल योगानन्द झा’क सर्वप्रमुख उपलब्धि परिश्रम, विषयविस्तार आ पाठ-संगठन अछि। तेरह विविध पुस्तकक अंदरूनी क्रम सामने रखब पाठक लेल विशेष सहायक अछि। लोकसाहित्यक उपेक्षित क्षेत्र, पत्रकारिताक दस्तावेजी प्रश्न, शाक्त गीतक समाहार, शब्दविज्ञान, सम्पादन आ बालसाहित्य पर बराबर ध्यान देल गेल अछि। एहि समग्रतासँ लेखकक बहुविध बौद्धिक जीवन एक ठाम देखाइत अछि।

सीमा मुख्यतः प्रमाणक असमानता, अत्यन्त विस्तृत उपविभाजनक भार आ किछु निष्कर्षक अपेक्षाकृत सामान्य रूपमे अछि। कोनो गीतक लघु अर्थ-सार आ कोनो ऐतिहासिक दावाक विस्तृत जाँच समान दर्जाक आलोचना नहि होइत। सैद्धान्तिक संकेतक संग प्राथमिक पाठक छोट, सुस्पष्ट उदाहरण जोडल जाए तँ निर्णय आओर दृढ़ होयत। गजेन्द्रक विमर्शक उपयोगिता एही असमानताक पहिचानब सँ घटैत नहि, बल्कि शोधक अगिला चरण स्पष्ट करैत अछि।

कृति केवल जीवनीपरक सम्मानग्रन्थ नहि। एतय एक विद्वानक तेरह ग्रन्थक अध्ययनक माध्यमँ मैथिली भाषाक लिखित आ मौखिक, संस्थागत आ घरेलू, शास्त्रीय आ लोकजीवी रूपसभक मानचित्र तैयार होइत अछि। ई मानचित्र पूर्ण नहि, मुदा बहुमूल्य अछि।

२३. समेकित निष्कर्ष

गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल योगानन्द झा’ पढ़ला पर योगानन्द झाक साहित्यिक व्यक्तित्वक सामान्य परिचय सँ कहीं अधिक व्यापक इतिहास सामने अबैत अछि। लेखकक काज मैथिली लोकसाहित्यक संकलन, भाषिक शब्दावलीक संरक्षण, साहित्यिक समालोचना, पाठसम्पादन, अनुवाद आ पत्रकारिता-अनुसन्धान धरि पसरल अछि। गजेन्द्रक पोथी एहि विस्तारक प्रमाणसहित अनुक्रम बनबैत अछि; ओकर उपयोग शोधक लेल एक प्रवेशद्वार रूपमे महत्त्वपूर्ण होएत।

आशीष अनचिन्हारक अंतिम निर्णय ई अछि जे एहि कृतिक महत्त्व प्रश्न खोलबामे अछि, सभ प्रश्नक अंतिम उत्तर देबामे नहि। लोकसाक्ष्य, मुद्रित पाठ, भाषिक प्रयोग आ ऐतिहासिक अभिलेखक सीमाकँ अलग राखल जाए तँ गजेन्द्रक अनुसन्धानक आधार पर अगिला पुस्ता अध्ययन सम्भव अछि। तेरह

ग्रन्थक आलोचनाकें एके ढाँचामे समेटने बिना एहन बहुविध मैत्रीपूर्ण किन्तु कठोर समालोचना मैथिली साहित्यक हितमे आवश्यक अछि।

सन्दर्भ-सूची

ठाकुर, गजेन्द्र । नित नवल योगानन्द झा । विदेह, २०२६ । (समीक्षाधीन मुख्य पोथी)।

गजेन्द्र ठाकुरक उक्त ग्रन्थमे विचाराधीन प्रमुख रचनासभ :

१. योगानन्द झा । लोकजीवन ओ लोकसाहित्य ।
२. योगानन्द झा । संकल्प : विद्यापति-स्मृति-पर्व स्मारिका ।
३. योगानन्द झा । आलेख सञ्चयन ।
४. योगानन्द झा । मैथिली शाक्त साहित्य ।
५. योगानन्द झा । मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष ।
६. योगानन्द झा । गहबर गीत ।
७. योगानन्द झा । लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा ।
८. योगानन्द झा । मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायिक शब्दावली ।
९. योगानन्द झा । कथा-लोककथा ।
१०. कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता' कृत सीतावतरण । सम्पादन : योगानन्द झा ।
११. महात्मा गाँधीक मंगल-प्रभात । मैथिली अनुवाद : योगानन्द झा ।
१२. भोरे-भोर । मैथिली अनुवाद : योगानन्द झा ।
१३. योगानन्द झा । चतुर्दश सूत्र ।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६९

तेरह समीक्षाधीन ग्रन्थक स्वतंत्र अध्ययन
लोकसाहित्य, पत्रकारिता, शब्दसम्पदा आ लोकगीत
काव्य, अनुवाद, बालसाहित्य आ समालोचनाक विवेचन
मैथिली साहित्यक स्रोताधारित समीक्षाक व्यापक प्रस्तुति।

मूल पाठ □ विस्तृत आलोचना □ सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह